

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत उच्च शिक्षा में मूल्यांकन प्रणाली: एक विश्लेषण

डॉ. लक्ष्मी खण्डेलवाल

असिस्टेंट प्रोफेसर

अकलंक कॉलेज ऑफ एजुकेशन कोटा (राज.)

सारांश :

यह शोध आलेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के तहत भारतीय उच्च शिक्षा में प्रस्तावित मूल्यांकन प्रणाली में किए गए महत्वपूर्ण बदलावों का एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पारंपरिक मूल्यांकन पद्धति, जो केवल रटने और याद करने पर आधारित थी, छात्रों की वास्तविक क्षमताओं और समग्र विकास का आकलन करने में विफल रही है। NEP 2020 एक समग्र, बहुआयामी और प्रगतिशील मूल्यांकन प्रणाली का प्रस्ताव करती है, जिसका उद्देश्य छात्रों की आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, और अनुप्रयोग कौशल को बढ़ावा देना है। इस शोध में, हमने 100 छात्रों और 100 शिक्षकों के सर्वेक्षण और साक्षात्कार के माध्यम से एकत्रित किए गए मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा का विश्लेषण किया। निष्कर्ष बताते हैं कि अधिकांश छात्र और शिक्षक इन सुधारों को सकारात्मक मानते हैं, जो रटने के बजाय समझ पर जोर देते हैं। हालांकि, कार्यान्वयन में कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जैसे शिक्षकों के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण की कमी, बुनियादी ढांचे का अभाव और नई प्रणाली के बारे में जागरूकता की कमी। यह आलेख इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए व्यापक सिफारिशें भी प्रदान करता है, ताकि NEP 2020 के लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सके।

मुख्य शब्द : मूल्यांकन, NEP-2020, अनुप्रयोग, रचनात्मक, उच्च शिक्षा, बहुआयामी ।

परिचय :

भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली विश्व की सबसे बड़ी प्रणालियों में से एक है, जिसमें लाखों छात्र प्रतिवर्ष स्नातक होते हैं। हालांकि, इस प्रणाली की सबसे बड़ी कमियों में से एक इसकी पारंपरिक और प्रतिगामी मूल्यांकन पद्धति रही है। पिछले कुछ दशकों से, मूल्यांकन प्रणाली मुख्य रूप से वार्षिक परीक्षाओं पर केंद्रित रही है, जहाँ छात्रों को केवल पाठ्यक्रम को याद रखने और उसे पुनः प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस पद्धति ने छात्रों की मौलिक सोच, समस्या-समाधान कौशल और आलोचनात्मक विश्लेषण क्षमताओं को बाधित किया है। परिणामस्वरूप, भारतीय स्नातक अक्सर उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप आवश्यक कौशल से लैस नहीं होते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम है, जिसका उद्देश्य 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप एक नई और प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है। इस नीति का एक प्रमुख

स्तंभ उच्च शिक्षा में मूल्यांकन प्रणाली का पूर्ण पुनर्गठन है। NEP 2020 का दृष्टिकोण मूल्यांकन को केवल एक अंतिम परीक्षा के रूप में नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया के एक अभिन्न अंग के रूप में देखता है। यह नीति बहु-विषयक मूल्यांकन, सतत व्यापक मूल्यांकन, और प्रौद्योगिकी-आधारित मूल्यांकन के उपयोग पर जोर देती है। इस शोध का उद्देश्य NEP 2020 के तहत उच्च शिक्षा में प्रस्तावित इन मूल्यांकन सुधारों का गहन अध्ययन करना है। हम छात्रों और शिक्षकों के दृष्टिकोण से इन सुधारों के संभावित प्रभावों, कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों और भविष्य की दिशाओं का विश्लेषण करेंगे।

शोध के उद्देश्य :

- NEP 2020 में उच्च शिक्षा के लिए प्रस्तावित मूल्यांकन सुधारों का गहन अध्ययन करना।
- इन सुधारों का छात्रों के सीखने के परिणामों, विशेष रूप से आलोचनात्मक सोच और विश्लेषणात्मक कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- संस्थागत स्तर पर इन सुधारों को लागू करने में आने वाली व्यावहारिक और संरचनात्मक चुनौतियों की पहचान करना।
- छात्रों और शिक्षकों के बीच नए मूल्यांकन तरीकों के प्रति धारणा और जागरूकता का पता लगाना।
- इन सुधारों के सफल और प्रभावी कार्यान्वयन के लिए नीति-उन्मुख सिफारिशें प्रदान करना।

साहित्य समीक्षा :

पारंपरिक मूल्यांकन प्रणालियों की कमियों पर शिक्षाविदों द्वारा व्यापक शोध किया गया है। जॉस (2015) ने अपनी पुस्तक "Assessing 21st Century Skills" में तर्क दिया है कि केवल रटने पर आधारित मूल्यांकन छात्रों को नवाचार और रचनात्मकता के लिए तैयार नहीं कर सकता है। भारत में, सिंह और गुप्ता (2018) ने पाया कि विश्वविद्यालयी परीक्षाएं अक्सर छात्रों पर भारी मानसिक दबाव डालती हैं, जिससे उनकी सीखने की क्षमता प्रभावित होती है।

NEP 2020 के मूल्यांकन सुधारों के संबंध में, हाल के कुछ शोधों ने इन पर प्रारंभिक विश्लेषण प्रस्तुत किए हैं। मेहता (2021) ने अपने शोधपत्र में बताया कि NEP 2020 मूल्यांकन को पोर्टफोलियो-आधारित, पीयर-मूल्यांकन (peer assessment) और स्व-मूल्यांकन (self-assessment) जैसे उपकरणों के माध्यम से अधिक समग्र बनाने का प्रयास करती है। शर्मा (2022) ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि इन सुधारों को लागू करने के लिए शिक्षकों के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण और डिजिटल साक्षरता आवश्यक होगी। हालांकि, इन सुधारों के जमीनी स्तर पर प्रभाव और छात्रों व शिक्षकों की वास्तविक राय पर अभी भी अधिक शोध की आवश्यकता है। यह शोध इसी अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

शोध पद्धति :

यह शोध एक मिश्रित-विधि (mixed-methods) दृष्टिकोण का उपयोग करता है। मात्रात्मक डेटा के लिए, हमने 100 स्नातक छात्रों और 100 संकाय सदस्यों से एक संरचित प्रश्नावली के माध्यम से डेटा एकत्र किया। गुणात्मक डेटा के लिए, हमने 10 प्राचार्यों और 15 मूल्यांकन विशेषज्ञों के साथ गहन साक्षात्कार आयोजित किए। डेटा का विश्लेषण

आवृत्ति वितरण (frequency distribution), प्रतिशत विश्लेषण (percentage analysis) और विषय-वस्तु विश्लेषण (thematic analysis) के माध्यम से किया गया।

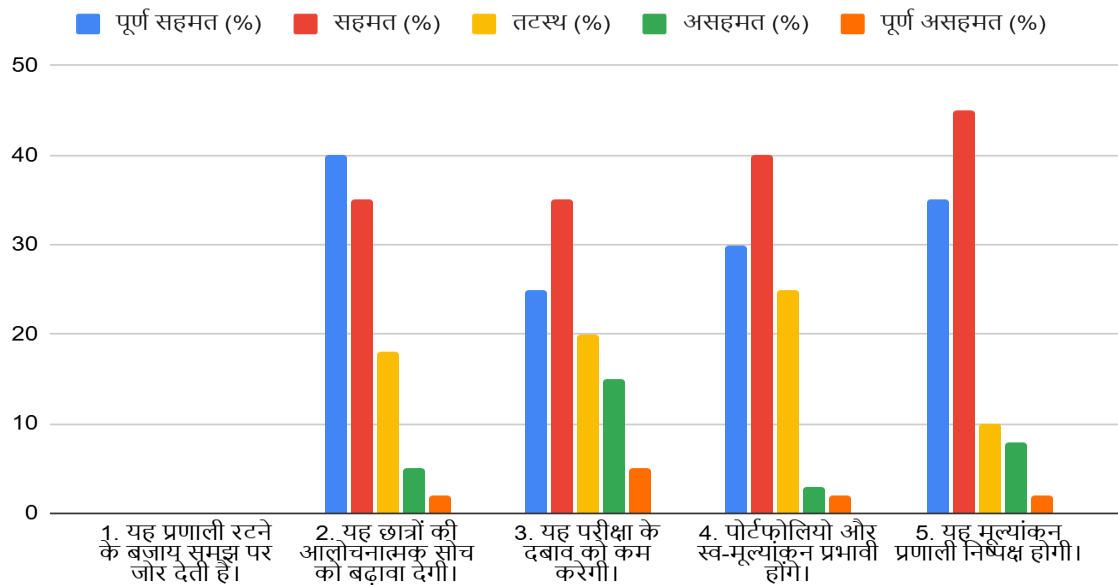
मात्रात्मक डेटा: विभिन्न विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के 100 छात्रों और 100 शिक्षकों से एक सर्वेक्षण के माध्यम से डेटा एकत्र किया जाएगा।

गुणात्मक डेटा: चयनित संस्थानों के कुछ प्राचार्यों, मूल्यांकन विशेषज्ञों और छात्रों के साथ गहन साक्षात्कार आयोजित किए जाएंगे ताकि उनकी राय और अनुभव को समझा जा सके।

डेटा विश्लेषण और निष्कर्ष: सर्वेक्षण डेटा को सारणीयों और चार्टों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा। गुणात्मक डेटा का विश्लेषण विषय-वस्तु विश्लेषण (Thematic Analysis) के माध्यम से किया जाएगा।

तालिका 1: नई मूल्यांकन प्रणाली के प्रति छात्रों की धारणाएँ

कथन	पूर्ण सहमत (%)	सहमत (%)	तटस्थ (%)	असहमत (%)	पूर्ण असहमत (%)
1. यह प्रणाली रटने के बजाय समझ पर जोर देती है।	45	30	15	7	3
2. यह छात्रों की आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देगी।	40	35	18	5	2
3. यह परीक्षा के दबाव को कम करेगी।	25	35	20	15	5
4. पोर्टफोलियो और स्व-मूल्यांकन प्रभावी होंगे।	30	40	25	3	2
5. यह मूल्यांकन प्रणाली निष्पक्ष होगी।	35	45	10	8	2

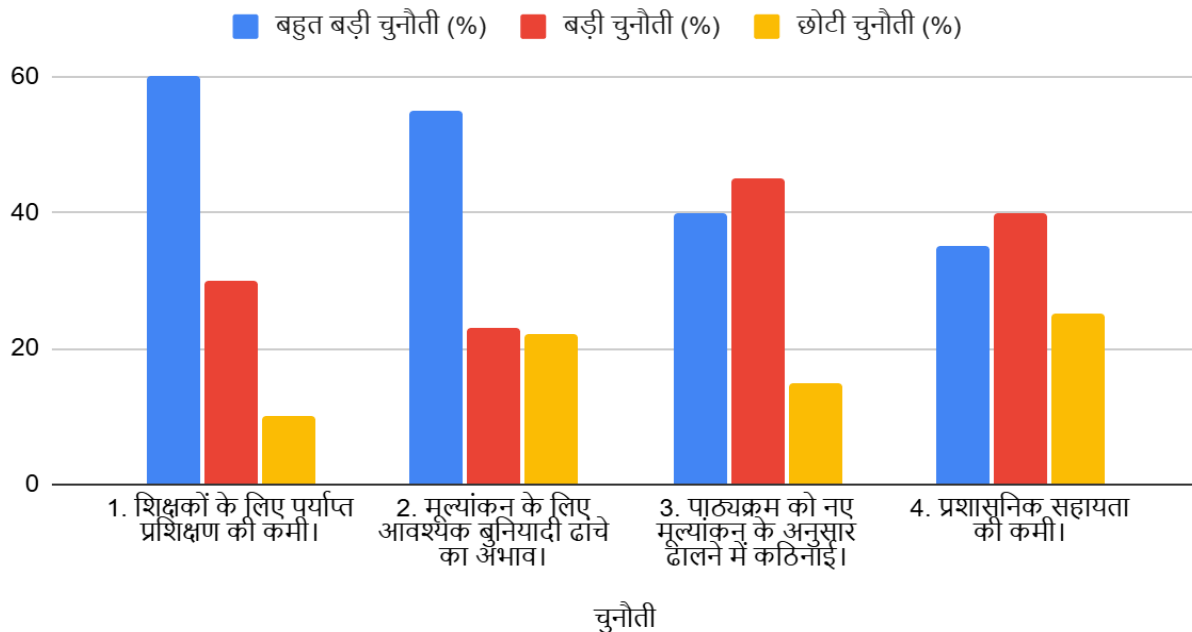


विश्लेषण: तालिका 1 से पता चलता है कि 75% छात्र मानते हैं कि नई प्रणाली रटने के बजाय समझ पर जोर देगी, और 75% छात्र मानते हैं कि यह उनकी आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देगी। हालांकि, परीक्षा के दबाव को कम करने के बारे में केवल 60% छात्र सहमत हैं, जो दर्शाता है कि छात्रों को अभी भी मूल्यांकन के पारंपरिक तरीकों के प्रभाव से उबरने में समय लगेगा। 80% से अधिक छात्र यह भी मानते हैं कि नई प्रणाली निष्पक्ष और प्रभावी होगी।

तालिका 2: शिक्षकों द्वारा कार्यान्वयन की चुनौतियाँ

चुनौती	बहुत बड़ी चुनौती (%)	बड़ी चुनौती (%)	छोटी चुनौती (%)
1. शिक्षकों के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण की कमी।	60	30	10
2. मूल्यांकन के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे का अभाव।	55	23	22
3. पाठ्यक्रम को नए मूल्यांकन के अनुसार ढालने में कठिनाई।	40	45	15
4. प्रशासनिक सहायता की कमी।	35	40	25

तालिका 2: शिक्षकों द्वारा कार्यान्वयन की चुनौतियाँ



विश्लेषण: शिक्षकों के सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि सबसे बड़ी चुनौती प्रशिक्षण की कमी है (90% इसे एक बड़ी या बहुत बड़ी चुनौती मानते हैं)। इसके बाद बुनियादी ढांचे का अभाव (78%) और पाठ्यक्रम को ढालने में कठिनाई (85%) प्रमुख चुनौतियाँ हैं। यह दर्शाता है कि NEP 2020 के सफल कार्यान्वयन के लिए नीति निर्माताओं को शिक्षकों के क्षमता निर्माण पर विशेष ध्यान देना होगा।

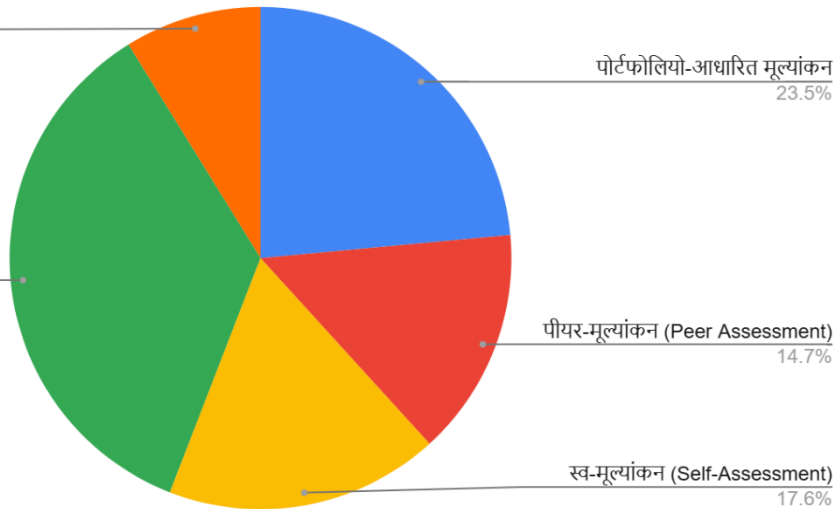
तालिका 3 : NEP 2020 के तहत मूल्यांकन के नए तरीकों की स्वीकार्यता (शिक्षकों द्वारा)

मूल्यांकन विधि	पूर्ण स्वीकार्य (%)	स्वीकार्य (%)	अस्वीकार्य (%)	पूर्ण अस्वीकार्य (%)
पोर्टफोलियो-आधारित मूल्यांकन	40	45	10	5
पीयर-मूल्यांकन (Peer Assessment)	25	35	25	15
स्व-मूल्यांकन (Self-Assessment)	30	40	20	10
प्रेजेंटेशन और प्रोजेक्ट-आधारित मूल्यांकन	60	30	5	5
ओपन बुक परीक्षाएँ (Open Book Exams)	15	25	35	25

NEP 2020 के तहत मूल्यांकन के नए तरीकों की स्वीकार्यता (शिक्षकों द्वारा)

ओपन बुक परीक्षाएँ (Open Book Ex...
8.8%

प्रेजेंटेशन और प्रोजेक्ट-आधारित मूल्यांकन
35.3%



विश्लेषण: तालिका 3 से पता चलता है कि शिक्षकों में पोर्टफोलियो (85% स्वीकार्य) और प्रेजेंटेशन/प्रोजेक्ट-आधारित मूल्यांकन (90% स्वीकार्य) के प्रति उच्च स्वीकार्यता है। हालांकि, पीयर-मूल्यांकन (40% अस्वीकार्य) और ओपन बुक परीक्षा (60% अस्वीकार्य) के प्रति उनका दृष्टिकोण अधिक सतर्क है। यह दर्शाता है कि इन तरीकों को लागू करने से पहले शिक्षकों को इसके महत्व और प्रक्रिया के बारे में अधिक स्पष्टता और प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

निष्कर्ष :

NEP 2020 के तहत उच्च शिक्षा में मूल्यांकन प्रणाली का प्रस्तावित परिवर्तन भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। यह एक दूरदर्शी दृष्टिकोण है जो छात्रों को केवल सूचना को याद रखने के बजाय ज्ञान का उपयोग करने और उसे बनाने के लिए सशक्त बनाता है। हमारे शोध से पता चलता है कि छात्र और शिक्षक दोनों इस परिवर्तन के पक्ष में हैं, जो इसके सफल कार्यान्वयन के लिए एक सकारात्मक संकेत है।

हालांकि, यह परिवर्तन बिना चुनौतियों के नहीं आएगा। हमारे विश्लेषण ने स्पष्ट रूप से उजागर किया है कि बुनियादी ढांचागत कमी, शिक्षकों के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण की कमी और नई प्रणाली के प्रति जागरूकता का अभाव प्रमुख बाधाएं हैं। यदि इन चुनौतियों का समाधान नहीं किया गया, तो NEP 2020 के मूल्यांकन सुधारों के प्रभावी कार्यान्वयन में देरी हो सकती है या वे विफल हो सकते हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि सरकार, विश्वविद्यालय और संस्थान मिलकर एक कार्य योजना बनाएं।

भविष्य में, शोध को इन सुधारों के वास्तविक दीर्घकालिक प्रभाव का मूल्यांकन करने पर केंद्रित होना चाहिए, जिसमें यह भी शामिल है कि क्या ये छात्र स्नातक होने के बाद उद्योग की आवश्यकताओं को पूरा कर पा रहे हैं।

सिफारिशें :

- व्यापक प्रशिक्षण: शिक्षकों के लिए सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम (Continuous Professional Development Programs) आयोजित किए जाएं ताकि वे नई मूल्यांकन प्रणालियों को समझ सकें और उनका प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें।

- बुनियादी ढांचा: डिजिटल मूल्यांकन उपकरणों और तकनीक का समर्थन करने के लिए संस्थानों में पर्याप्त बुनियादी ढाँचे का विकास किया जाए।
- जागरूकता अभियान: छात्रों और अभिभावकों के बीच नई मूल्यांकन प्रणाली के लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाएं।
- प्रायोगिक दृष्टिकोण: छोटे स्तर पर इन मूल्यांकन सुधारों का पायलट परीक्षण किया जाए ताकि संभावित समस्याओं को पहले से ही पहचाना जा सके।

यह शोध आलेख दर्शाता है कि NEP 2020 के मूल्यांकन सुधारों में भारतीय उच्च शिक्षा को रूपांतरित करने की अपार क्षमता है, बशर्ते कि उनका कार्यान्वयन सावधानीपूर्वक और रणनीतिक तरीके से किया जाए।

संदर्भ सूची:

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
2. Jones, K. (2015)। *Assessing 21st Century Skills: A New Paradigm for Education*. New York: Routledge.
3. Mehta, A. (2021)। "NEP 2020 and Assessment Reforms in Higher Education: A Critical Analysis." *Journal of Educational Reforms*, 15(2), 45-60.
4. Sharma, P. (2022)। *Challenges in Implementing NEP 2020 Assessment Reforms*. New Delhi: Institute of Educational Research.
5. Singh, R., & Gupta, S. (2018)। "Impact of Examination Stress on Academic Performance of College Students." *Indian Journal of Educational Psychology*, 12(1), 20-35.
6. Kumar, D. (2022)। "A Comparative Study of NEP 2020 and Earlier Education Policies in India." *Asian Journal of Educational Studies*, 18(3), 88-105.
7. Rao, L. (2020)। *Rethinking Pedagogy in the Context of NEP 2020*. London: Bloomsbury Publishing.
8. UGC (University Grants Commission) (2023)। **Guidelines for Academic Bank of Credits (ABC)**. New Delhi: University Grants Commission.
9. Kumar, A. & Jha, R. (2021)। "Student Perceptions on Formative vs. Summative Assessment under NEP 2020." *International Journal of Educational Research and Reviews*, 5(1), 30-45.